आर.एन.आई. / एम पी एच आई एन 2006 / 19977
डाक पंजीयन : म.प्र. / भोपाल / 530 / 2009–2011

शब्दशिल्पियों के आसपास

रचनाधर्मियों की मासिक सम्वाद–पत्रिका

पूर्णांक : 154
वर्ष : 13 अंक : 10 फरवरी 2011

आसपास इस बार

दुष्यन्त कुमार स्मारक पाण्डुलिपि संग्रहालय ने किया प्रकाश खातरकर का अभिनन्दन

किताबों का अनूठा संग्रह

भारत भवन में दो दिन दो 'नाटक'

संग्रहालय का 'पुस्तक पर्व' 12 से 16 मार्च

वर्दी में हमदर्दी नहीं चलती

सम्पादक
राजुरकर राज
सहायक सम्पादक : करुणा राज

सहयोग : संगीता राजुरकर

ताज़ा समाचारों के लिए
website : www.dharohar.net

वार्षिक	:	60 रुपये
त्रिवार्षिक	:	150 रुपये
आजीवन	:	1000 रुपये

सम्पर्क
एच–3, उद्धवदास मेहता परिसर,
नेहरू नगर, भोपाल–462003
चलित वार्ता : 9425007710
सम्पादन–प्रकाशन : अवैतनिक–अव्यावसायिक

website : www.dharohar.net
e-mail : shabdashilpi@yahoo.com

ताज़ा समाचारों के लिए
website : www.dharohar.net

दुष्यन्त कुमार स्मारक पाण्डुलिपि संग्रहालय
एफ–50 / 17, दक्षिण तात्या टोपे नगर, शरद जोशी मार्ग, भोपाल–462003
दूरवार्ता : 0755–2775129, 9425007710, 9713818129, 9479377110

●इस सम्वाद पत्रिका के माध्यम से हम रचनाकारों में पारिवारिक आत्मीयता और रचनात्मक सक्रियता बनाये रखने का प्रयास कर रहे हैं. किसी के सम्मान में ठेस पहुँचाना या किसी की मानहानि हमारा लक्ष्य नहीं है. फिर भी जाने–अनजाने ऐसा हो तो हम अग्रिम खेद व्यक्त करते हैं. ●बहुत–सी सामग्री हम अन्य पत्र–पत्रिकाओं से लेते हैं, उनके प्रति हम अग्रिम कृतज्ञ हैं.●सूचनाओं की प्रामाणिकता के लिए सम्बन्धित से ही सम्पर्क करें. किसी भी तरह का दावा मान्य नहीं होगा. ●हम कोई विवाद नहीं चाहते. फिर भी हुआ, तो निपटारा भोपाल न्यायालय के अधीन.

महाप्राण निराला

जयन्ती : वसन्त पंचमी

जन्म : 21 फरवरी 1897 निधन : 15 अक्टूबर 1961

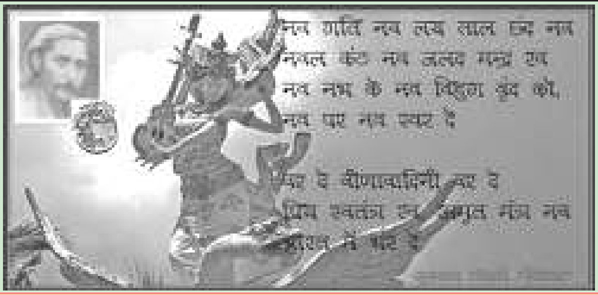

कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती ।
नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है,
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है ।
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है,
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है ।
आख़िर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती ।

डुबकियां सिंधु में गोताखोर लगाता है,
जा जा कर खाली हाथ लौटकर आता है ।
मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में,
बढ़ता दुगना उत्साह इसी हैरानी में ।
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती ।

असफलता एक चुनौती है, इसे स्वीकार करो,
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो ।
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम,
संघर्ष का मैदान छोड़ कर मत भागो तुम ।
कुछ किये बिना ही जय जयकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती ।

यह रचना कविताकोश पर देखी जा सकती है। इस रचना के रचनाकार के बारे में मतभेद है। कुछ लोग इसे सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी की रचना बताते हैं और कुछ हरिवंशराय बच्चन जी की। यदि आपके पास इस दुविधा को दूर करने के लिये इस बारे में कोई प्रमाण हो तो कृपया kavtakiosh@gmail.com पर सूचना दें।

—कविता कोश टीम

भारत भवन में, दो दिन दो 'नाटक'

थाने पहुँचा नाटक का मामला, नाटक के मामले में भारत भवन पहुँची पुलिस

भोपाल। भोपाल के इतिहास में पहली बार ऐसा हुआ है बिना अनुमति कहानी इस्तेमाल करने पर भारत भवन में एक नाटक का मंचन रोक देना पड़ा। पद्मश्री मेहरून्निसा परवेज़ शहर के क्रिएटिव आर्ट एण्ड कल्चर सोसायटी से इस बात से नाराज़ हैं कि उन्होंने बिना अनुमति के उनकी कहानी का नाट्य रूपांतरण किया। श्रीमती परवेज़ की नाराजगी के बाद नाटक का मंचन निरस्त कर दिया गया।

भारत भवन में महिला रंगनिर्देशकों के छै दिवसीय नाट्य समारोह में पहले दिन कहानी की लेखिका ने मंचन की अनुमति न लेने के मुद्दे पर नाटक रुकवाया, वहीं चौथे दिन नाटक की कथावस्तु को लेकर परम्परावादियों ने नाटक में हंगामा किया। पहले दिन लेखिका के ज़िद के कारण नाटक रद्द करना पड़ा, वहीं चौथे दिन दर्शकों और रंगकर्मियों के कारण उपद्रवियों को रंगदीर्घा के बाहर का रास्ता देखना पड़ा।

भारत भवन रंगमंडल की ओर से 18 जनवरी से महिला रंगकर्मियों के नाटकों का समारोह शुरू होने जा रहा था लेकिन इसका पहला नाटक ही विवाद में पड़ गया। पहले दिन मंगलवार 18 जनवरी को मेहरून्निसा परवेज़ की कहानी पर आधारित रंगकर्मी नीति श्रीवास्तव निर्देशित नाटक 'ओढ़ना' का मंचन होना था। लेकिन सुश्री परवेज़ ने नाट्य संस्था और निर्देशक पर आरोप लगाया कि इस बारे में उनसे कोई अनुमति नहीं ली गई है। 'नवदुनिया' से चर्चा में उन्होंने कहा–'ना तो मुझसे अनुमति माँगी गई, न ही उन्होंने मुझे रिहर्सल में बुलाया और न ही आज नाटक के मंचन पर बुलाया। इससे पहले भी वे यह नाटक खेल चुके हैं, जब मैं शहर में नहीं थी। मुझे पता चला तो मैंने थाने में शिकायत दर्ज कराई। यह तो एक प्रकार से चोरी व दादागिरी हुई। लेखकों के पास उनकी रचनाओं के सिवा होता ही क्या है, उन्हें कोई कैसे भूल सकता है। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय भी मेरी रचना का अगर, उपयोग करता है तो बकायदा दिल्ली से बुलावा आता है और मैं वहाँ जाकर प्रस्तुति व रिहर्सल देखती हूँ। यहाँ तो मेरे ही शहर में मुझे अनदेखा किया जा रहा है।

श्रीमती परवेज़ की आपत्ति के बाद मंचन निरस्त कर दिया गया। इस मामले में निर्देशक नीति श्रीवास्तव का कहना है कि 'हमारी संस्था के सचिव ने लेखिका से मौखिक अनुमति माँगी थी। जैसे ही मुझे पता चला कि लेखिका को आपत्ति है तो मैंने भारत भवन को लिखकर दे दिया कि हम यह नाटक नहीं कर सकते।'

गौरतलब है कि इससे पहले भी अनुमति को लेकर भारत भवन में एक मामला हो चुका है मगर नाटक का मंचन नहीं रुका था। थाने में शिकायत दर्ज होने और नाटक का मंचन रुकने की यह पहली घटना है।

'नवदुनिया' में ऐसा छपा

अब पुलिस से पूछकर होगा नाटक

महिला नाट्य निर्देशकों पर केंद्रित नाट्य समोराह चौथे दिन शुक्रवार 21 जनवरी को अपने न्यूनतम स्तर पर पहुँच गया। कलाओं के घर में पहले नाटक का विरोध करने कुछ युवा आए और फिर स्थिति बिगड़ती देख पुलिस आई। भारत भवन में तकरीबन दो घंटे तक घमासान चला मगर भारत भवन के प्रशासनिक अधिकारी गायब रहे।

भारत भवन में चल रहे छह दिवसीय महिला निर्देशक केन्द्रित नाट्य समारोह के चौथे दिन शुक्रवार को जबलपुर की विवेचना रंगमंडल द्वारा प्रगति पांडेय निर्देशित और विभा रानी लिखित नाट्य 'पीर पराई' का मंचन किया गया। नाटक के शुरू हुए दस मिनट ही हुए थे कि भाजपा सांस्कृतिक प्रकोष्ठ के संयोजक राजेश भदौरिया अपने दस–पन्द्रह साथियों के साथ मंच पर नारे लगाते आ गए और विरोध करते हुए नाटक को बन्द करने को कहने लगे। इस दौरान उन्होंने मंच पर रखा कुछ सामान को भी फेंक दिया।

तब दर्शकों ने उन्हें रोका और नाटक में व्यवधान न डालने का आग्रह किया। मजबूरन राजेश भदौरिया और साथियों को हाल से बाहर जाना पड़ा और नाटक फिर से चालू कर दिया गया। दर्शकों ने तालियाँ बजाकर कलाकारों का उत्साहवर्धन किया। दोबारा नाटक शुरू हुए पन्द्रह–बीस मिनट ही हुए थे कि भारत भवन परिसर में संस्कृति बचाओ मंच अपने साथ करीब पच्चीस पुलिसकर्मी लेकर आ गया। संस्कृति बचाओ मंच के प्रदेशाध्यक्ष चंद्रशेखर तिवारी का कहना था कि नाटक में हिन्दू

धर्म के खिलाफ गलत भावनाएं प्रदर्शित की जा रही हैं इसे बन्द कराया जाए।

इस पर सीएसपी मनु व्यास ने नाटक के आयोजक अरूण पांडेय को बुलाकर नाटक की कहानी के बारे में पूछा। कहानी सुनकर और चंद्रशेखर के बयानों के आधार पर सीएसपी ने नाटक को बंद कराने के लिए कहा और चंद्रशेखर से लिखित में शिकायत ली। पुलिस ने यहां तक कहा कि आगे से भारत भवन में होने वाले नाटकों की स्क्रिप्ट पुलिस को भी दिखाई जाए ताकि लॉ एंड आर्डर की कोई समस्या न आए।

उधर भारत भवन में चल रहे नाटक को एक बार बंद करने के लिए कहा गया, जिस पर दर्शक भड़क गए और नाटक बंद करने पर एतराज उठाने लगे। दर्शकों का तर्क था कि नाटक में ऐसा कुछ भी नहीं है, जो किसी धर्म के खिलाफ गलत बयानी कर रहा हो। जब अरूण पांडेय ने कहा कि नाटक को बंद करने के लिए भारत भवन प्रशासन का दबाब आ रहा है, इसलिए नाटक को बंद किया जा रहा है। तब कलाकारों ने लगभग पूरे हो चुके नाटक की समाप्ति एक गाने के साथ की।

धन्य है भोपाल के दर्शक

नाटक के खत्म होते ही कलाकारों का परिचय कराया गया। प्रत्येक परिचय पर दर्शकों ने जमकर तालियां बजाई और उनको प्रोत्साहित किया। इस पर बाहर से आए सभी कलाकारों ने भोपाल के दर्शकों को नमन किया और उनका अभिवादन करते हुए कहा कि ऐसे दर्शक जब तक भारत भवन में आते रहेंगे, तब तक भारत भवन से कला कभी खत्म नहीं होगी।

क्या थी आपत्ति

भाजपा सांस्कृतिक प्रकोष्ठ व संस्कृति बचाओ मंच के कार्यकर्ताओं का कहना था कि नाटक में श्रीरामचंद्र के जन्म के समय किसी हिरण की हत्या कर उसका मांस परोसा जाना गलत है। नाटक में श्रीरामचंद्र के जन्मोत्सव को दिखाया गया। इस दौरान होने वाले भोज में एक हिरणी के बच्चे को मार दिया जाता है। जिस पर उसकी माँ के वियोग और तकलीफ को दिखाया गया और दूसरी ओर राम की माँ कौशल्या की खुशी दिखाई गई। यह प्रस्तुति लोकगीतों के माध्यम से हुई।

दैनिक जागरण में छपा

इनका कहना है :

बच्चे हो, काम करो कहानी पर

कहानी 'ओढ़ना' के पिछले मंचन के दौरान वरिष्ठ लेखिका मेहरून्निसा परवेज़ से अनुमति ली गई थी। तब उन्होंने मौखिक अनुमति देते हुए कहा था कि बच्चे हो, काम करो कहानी पर। उसी आधार पर इस साल भी नाटक के मंचन का फैसला लिया था। इस नाराजगी का पता चलते ही हमारी टीम ने भारत भवन प्रबंधन को नाटक का मंचन न कर सकने के बारे में लिखित में सूचित कर दिया।

आशीष श्रीवास्तव, सचिव क्रिएटिव आर्ट एंड कल्चर

माँग लूंगी माफी

हमारा लेखिका मेहरुन्निसा परवेज़ को आहत करने का कोई इरादा नहीं था। हमने पूरी ईमानदारी से रंगमंच के लिए एक श्रेष्ठ नाटक रचने की कोशिश की थी। इसके बाद भी उनको जो दुख हुआ है उसके लिए मैं सार्वजनिक रूप से माफी मांगने को तैयार हूँ।

नीति श्रीवास्तव, नाटक की निर्देशक

मैंने कभी लिखित अनुमति नहीं दी

मैंने कहानी के नाट्य मंचन की कभी कोई लिखित अनुमति नहीं दी है। क्रिएटिव आर्ट संस्था की टीम ने इस विषय में बात की थी, तो मैंने कहा था कि इस विषय पर काम करो.....। तब मुझे लगा था कि वे लिखित में मुझसे अनुमति लेंगे। अगर संस्था के साथ लिखित में अनुमति है तो उसे सामने लेकर आए। इस नाट्य मंचन की जानकारी के बाद मैंने पुलिस में भी प्रकरण दर्ज कराया है।

मेहरून्निसां परवेज़, कहानी 'ओढ़ना' की लेखिका

आखिर क्यों ठगा जाए दर्शक

किसी भी विवाद के चलते समारोह में तय कार्यक्रमों का रद्द किया जाना सही नहीं है। ऐसे आयोजनों में अच्छे नाटक देखने की उम्मीद होती है। नाटक रद्द करने पर नुकसान दर्शक और रंगमंच का ही होता है।

केजी त्रिवेदी, वरिष्ठ निर्देशक

सम्मान जरूरी, मंचन रद्द होना ग़लत

नाट्य मंचन के दौरान लेखक का सम्मान किया जाना चाहिए, लेकिन किसी भी विवाद के चलते नाटकों का मंचन रद्द किया जाना अच्छा फैसला नहीं है।

अशोक बुलानी, वरिष्ठ निर्देशक

दैनिक भास्कर में ऐसा छपा

रचना पर हक किसका

रचना पर आखिर हक किसका होता है और नैतिकता क्या कहती है? इस सवाल के जवाब में लेखिका **उर्मिला शिरीष** कहती हैं कि बिना लेखक की अनुमति के नाट्य

रूपांतरण व मंचन दोनों गलत है। यह लेखक के अधिकार का हनन है। वहीं वरिष्ठ समीक्षक **रामप्रकाश त्रिपाठी** कहते हैं कि नैतिकता तो यह कहती है कि रचनाकार से अनुमति लेनी चाहिए। मगर एक दूसरा पहलू यह है कि अगर नाट्य रूपांतरण किया है तो यह 'अनुरचना' हुई जो कि स्वयं में एक स्वतंत्र रचना है। बावजूद इसके ये तो तय है कि रचना का इस्तेमाल कर रहे हैं तो अनुमति लेनी चाहिए।

आधुनिक साहित्य का मामला अलग है

वरिष्ठ रंगकर्मी **आलोक चटर्जी** का कहना है कि जो रचना समय के साथ अपने आप को क्लासिक साबित कर देती है वह जनसामान्य की हो जाती है जैसे कि रामायण–महाभारत, उसके लिए किसी की अनुमति लेना अनिवार्य नहीं। लेकिन जहां तक आधुनिक साहित्य की विधा की बात है तो कॉपीराइट एक्ट लागू होता है। लेखक की अनुमति के बगैर उसकी रचना का उपयोग करना गलत है। यह मूल रूप से लेखक का मौलिकता का हनन है। यह बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है कि इसी देश में एक समय में रचनाकार, निर्देशक और अभिनेता साथ में बैठकर काम करते थे चाहे वह भारतेन्दु का समय हो या मोहन राकेश का। आज भी यही होना चाहिए कि अपने–अपने 'ईगो' में कैद होने के बजाय इन सभी को आपस में संवाद कायम रखना चाहिए। जब तक इन तीनों का मणिकांचन योग नहीं होगा महान नाटक पैदा नहीं होंगे।

शो मास्ट गो ऑन

भारत भवन रंगमंडल के सचिव **जावेद जैदी** ने कहा कि रचनाकार से अनुमति लेना अनिवार्य है। मराठी रचना जगत तो इस मामले में काफी सख्त है क्योंकि मराठी रंगमंच बेहद कमर्शियल है। हिन्दी रचनाकार तो केवल एक अनुमति मांगने से ही संतुष्ट हो जाता है। अगर गलती हुई है तो नाट्यकर्मी को माफी मांग ले लेनी चाहिए। रचनाकार को भी थोड़ी नरमी बरतनी चाहिए मगर नाटक का मंचन नहीं रूकना चाहिए–'शो मस्ट गो ऑन' तो नहीं रहा।

मैं अभी ज़िंदा हूँ : मेहरुन्निसा परवेज़

पद्मश्री मेहरून्निसा परवेज़ का कहना है कि मेरे जिंदा होते हुए यह हाल है तो मेरे जाने के बाद तो कोई पूछेगा ही नहीं। साहित्य की इस डकैती से बहुत दुख हुआ। कोई लेखक को आप कैसे भूल सकते हैं, सबको बुलाया मगर गरीब लेखक को ही नहीं बुलाया। अब तो डर लगता है किसी को कोई चीज़ किसी को पढ़ने के लिए देने में। लेखक घर में बैठा है और वाहवाही ये लूट रहे हैं। हमारी रचना हमारा ऑक्सीजन है, इससे हम साँस लेते हैं। इसी के कारण जिंदा हैं। ये शब्द नहीं हमारा खून है। ये हमारा ऑक्सीजन छीनकर हमें मारना चाहते हैं। इस पर भारत भवन को एक्शन लेना चाहिए।

श्रीमती परवेज़ ने एक पुरानी घटना का ज़िक्र करते हुए आगे कहा कि दुष्यंत कुमार ने एक बार मुझे बताया था कि जब वो गांव में थे और उन्हें पहला हार्ट अटैक आया तो वे पेड़ के नीचे लेट गए और अपनी किताबें छाती पर रखकर खूब दबाया। इससे उन्हें बेहद आराम मिला। मेरे साथ भी ऐसा ही होता है कि जब मेरी कोई किताब छपकर आती है, अपनी छाती पर रख लेती हूँ। हमारे सारे सुख–दुःख इसी में तो हैं।

नवदुनिया में आशा सिंह के हवाले से ऐसा छपा

सतपुड़ा समय

प्रबन्ध सम्पादक
बाबूलाल मंडलोई

सम्पादक
हनुमन्त मनगटे

सम्पादकीय कार्यालय
38, विवेकानन्द मार्ग, छिन्दवाड़ा–480551

मनोहर बाथम का कविता संग्रह

सरहद से

मूल्य 100 रुपये

मनोहरलाल बाथम
उपमहानिरीक्षक, सैक्टर मुख्यालय
सीमा सुरक्षा बल, आइजोल, थिम्पुई
मिजोरम–796017 दूरभाष : 0389 2351377

नेशनल बुक ट्रस्ट के सहयोग से दुष्यन्त कुमार स्मारक पाण्डुलिपि संग्रहालय का

पाँच दिवसीय प्रतिष्ठा समारोह 'पुस्तक पर्व'

भोपाल। दिल्ली के नेशनल बुक ट्रस्ट के सहयोग से दुष्यन्त कुमार स्मारक पाण्डुलिपि संग्रहालय द्वारा पाँच दिवसीय 'पुस्तक पर्व' मार्च के दूसरे सप्ताह में आयोजित होगा। समारोह में पुस्तक संस्कृति के विकास पर राष्ट्रीय सेमीनार के साथ ही शहर के प्रमुख मार्गों से 'पुस्तक यात्रा' भी निकलेगी। संग्रहालय परिसर में पाँच दिनों तक पुस्तक मेला और पुस्तक प्रदर्शनी लगी रहेगी, जिसमें देश के अनेक महत्वपूर्ण प्रकाशकों को आमंत्रित किया गया है।

उल्लेखनीय है कि गत वर्ष भी विश्व पुस्तक दिवस पर संग्रहालय द्वारा नेशनल बुक ट्रस्ट के सहयोग से तीन दिवसीय 'पुस्तक पर्व' आयोजित किया था, जिसकी व्यापक चर्चा हुई।

नेशनल बुक ट्रस्ट के सहयोग से आयोजित किये जाने वाले इस समारोह में 12 मार्च को पुस्तक पर्व का उद्घाटन, 13 मार्च को अलंकरण समारोह, 14 मार्च को कवि सम्मेलन, 15 मार्च को पुस्तक संस्कृति के विकास पर राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं 16 मार्च को समापन होगा। अलंकरण समारोह में श्री सोम ठाकुर एवं श्री राजेश जोशी को 'दुष्यन्त अलंकरण', श्रीमती मालती जोशी एवं प्रो. भगवत रावत को 'दीर्घ साधना सम्मान' तथा श्री हरिहर वैष्णव (कोण्डागाँव, बस्तर) एवं श्री नरहरि पटेल (इन्दौर) को 'आंचलिक रचनाकार सम्मान' से अलंकृत किया जायेगा।

'पुस्तक पर्व'

सहयोग नेशनल बुक ट्रस्ट (इंडिया) नई दिल्ली

12 मार्च : उद्घाटन समारोह

13 मार्च : अलंकरण समारोह

14 मार्च : कवि सम्मेलन

15 मार्च : राष्ट्रीय संगोष्ठी

16 मार्च : समापन समारोह

'पुस्तक पर्व' में देश के अनेक महत्वपूर्ण प्रकाशकों को आमंत्रित किया गया है। इसके अलावा प्रतिष्ठित साहित्यकार इस समारोह में भाग लेंगे।

उल्लेखनीय है कि विगत चार वर्षों से दुष्यन्त कुमार स्मारक पाण्डुलिपि संग्रहालय ने 'बुके नहीं, बुक दें' परम्परा की शुरुआत की है। इसके अन्तर्गत संग्रहालय में आने वाले अतिथि अथवा संग्रहालय द्वारा आयोजित किये जाने वाले किसी भी समारोह में अतिथियों का स्वागत पुष्पहार या गुलदस्ते ने न करके 'पुस्तक और पुष्प' से किया जाता है। इस परम्परा का देश के अनेक साहित्यकारों ने स्वागत किया है।

गत वर्ष नेशनल बुक ट्रस्ट के सहयोग से संग्रहालय द्वारा आयोजित 'पुस्तक पर्व' में पुस्तक रैली का चित्र

उल्लेखनीय

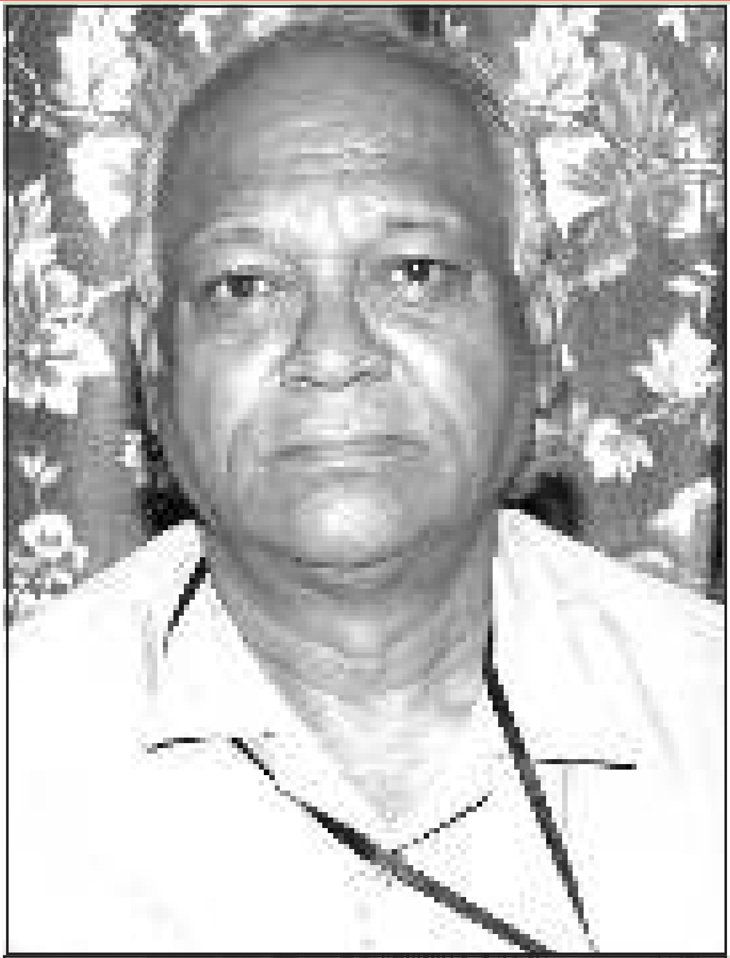

किताबों का अनूठा संग्रह

कमला पार्क निवासी खालिद आबिदी को बचपन से ही किताबें पढ़ने और उनका संग्रह करने का शौक है। उनके पास लगभग एक लाख रूपए से अधिक की किताबें हैं। घर के दीवान के अलावा इनके पास 18 बड़ी–बड़ी अलमारियां हैं, जो दुर्लभ और महत्वपूर्ण किताबों से भरी हैं। आकाशवाणी में कार्यक्रम अधिकारी के पद से रिटायर्ड खालिद बताते हैं, पिछले पचास सालों से मैं निःशुल्क लायब्रेरी चला रहा हूँ। यह मेरी पर्सनल मोबाइल लायब्रेरी है, जिसका लाभ कोई भी पुस्तक प्रेमी ले सकता है।

पर्शियन साहित्य भी है

मेरे पास सात हजार से ज्यादा किताबें हैं। इनमें इतिहास, व्यंग्य, नाटक, मैग्जीन, पेपर आदि के अलावा कुछ दुर्लभ किताबें भी हैं। सबसे ज्यादा उर्दू साहित्य और फिल्म साहित्य की किताब हैं। मेरे पास लगभग 300 वर्ष पुराना पर्शियन साहित्य भी है। इस हस्तलिखित किताब की विशेषता है यह कि इसे दो भाइयों (लक्ष्मीशंकर–बेनीलाल) ने लिखा है। किताब में उपलब्ध जानकारी पर नज़र डाली जाए तो लेखन और विचारों में इतनी समानता है कि पता ही नहीं चलता कि किताब का कितना हिस्सा किसने लिखा है।

घर जाकर देते हैं किताब

मेरे जीवन में किताबों का बहुत महत्व है। शहर के कई प्रोफेसर, शोधार्थी और पुस्तक प्रेमी मुझसे किताबें लेते हैं। मैं यह किताबें निःशुल्क देता हूँ। इन्हें लेने के लिए पाठक को खुद मेरे पास आने की जरूरत नहीं है क्योंकि मेरे यहाँ बैठकर पढ़ने की जगह नहीं है। इसलिए कोई भी किताब मैं बताए पते पर पहुँचा देता हूँ और उन्हें लेने भी चला जाता हूँ। अगर कोई खुद आकर किताब दे जाए तो उनका शुक्रगुजार रहता हूँ।

खुद भी लिखी किताब

अब तक मैं 11 किताबें लिख चुका हूँ और तीन पुरस्कार मिले हैं। इनमें समीक्षात्मक लेखों के लिए बिहार उर्दू अकादमी से, नाट्य लेखन के लिए

श्री खालिद आबिदी को सम्मानित करते प्रो. आफफाक अहमद

उ.प्र. साहित्य अकादमी से और शोध संबंधी योगदान के लिए मध्यप्रदेश उर्दू अकादमी से भी पुरस्कार मिला है।

वापस नहीं देते किताबें

जब मैं बैतूल में था, उस समय भयंकर बाढ़ आई और वहाँ रखी 723 किताबें नष्ट हो गईं। '20वीं शताब्दी में उर्दू का पत्र साहित्य' पर लगभग पूरी हो चुकी मेरी पीएचडी की थीसिस भी बर्बाद हो गई। मुझे तब दुख ज्यादा होता है जब लोग पीएचडी और अध्ययन के लिए किताबें ले लेते हैं और वापस नहीं करते। उन किताबों को प्राप्त करने के लिए मुझे काफी मशक्कत भी करनी पड़ती है। कुछ लोग तो मेरी लायब्रेरी का उपयोग कर अपनी किताब छपवा लेते हैं और किताब के किसी कोने में लायब्रेरी का ज़िक्र तक नहीं करते। यहाँ तक कि 3–4 साल हो जाने पर भी किताब वापस नहीं करते।

दैनिक भास्कर में ऐसा छपा

शब्दशिल्पियों के आसपास

रचनाधर्मियों की मासिक सम्वाद–पत्रिका

'शब्दशिल्पियों के आसपास' का प्रकाशन माह में एक ही बार होता है, लेकिन इस बीच किसी महत्वपूर्ण घटना या गतिविधि की सूचना से अब आप वंचित नहीं रहेंगे। दुष्यन्त कुमार स्मारक पाण्डुलिपि संग्रहालय की वेबसाइट www.dharohar.net से आप ताज़ा समाचारों की जानकारी ले सकते हैं। हालांकि अभी भी इस वेबसाइट का काम चल रहा है, फिर भी आपको ताज़ा समाचार और भोपाल में होने वाले आयोजनों के बारे में जानकारी मिल जायेगी।

इसके 'निर्देशिका' में आप अपना नाम, पता और परिचय दर्ज कर सकते हैं। नाम प्रविष्ट करने के तत्काल बाद तो आप उसे नहीं देख सकेंगे, लेकिन एक–दो दिनों बाद ही आपको देखने मिल जायेगा। इसमें आप अपना चित्र भी दे सकते हैं।

यदि आप किसी पत्रिका का सम्पादन कर रहे हैं या आपकी कोई पसन्दीदा पत्रिका है, तो 'पत्रिका कोष' में उसकी जानकारी दे सकते हैं। किसी भी तरह की सूचना अथवा अपनी राय आप हमें दे सकते हैं। आपको हिन्दी टाइपिंग आना ज़रूरी नहीं है। आप अंग्रेज़ी में bhopal टाइप करने के बाद स्पेस बार दबायेंगे तो वह 'भोपाल' में स्वतः बदल जायेगा। आप हमें अपनी सूचनाएं ई–मेल shabdashilpi@yahoo.com के ज़रिये भी दे सकते हैं।

लोक के रेखांकन का विनम्र प्रयास

मड़ई

का अंगला अंक

जून 2011

रजत जयन्ती अंक होगा

लोक संस्कृति को नये चिंतन से सम्बद्ध करने तथा उसकी नई अवधारणाओं को रेखांकित करने का हमारा यह विनम्र आयोजन पिछले 25 वर्षों से आपके स्नेहिल सहयोग के कारण निरंतर गतिमान है। लोक संस्कृति के लिए वैसे भी साहित्य में बहुत कम स्पेस रह गया है। हमारे विद्वानों एवं चिंतकों की उपेक्षा के कारण हम प्रत्येक अंक के लिए स्तरीय सामग्री जुटा पाने में बहुत सी कठिनाइयों का सामना करते हैं। लोक संस्कृति पर एकाग्र गंभीर एवं मौलिक सामग्री के प्रकाशन के लिए हम प्रतिबद्ध रहे हैं।

आगामी जून 2011 में प्रकाश्य 'मड़ई' के 25वें (रजत जयंती अंक) के लिए हम आपसे सकारात्मक सहयोग की अपेक्षा करते हैं। हमारी आवश्यकताएँ निम्नलिखित हैं–

- लोक संस्कृति की नई अवधारणाओं को रेखांकित करने वाली गंभीर, शोधपरक सामग्री।
- लोक नाट्य, लोक नृत्य एवं लोक के अन्य पहलुओं का तथ्यपरक विश्लेषण करने वाली रचनाएँ।
- लोक से सम्बद्ध एवं सक्रिय महत्वपूर्ण विद्वानों, चिंतकों और कलाकारों के साक्षात्कार।
- लोक संस्कृति के प्रति समर्पित लोगों, शोधार्थियों एवं इस क्षेत्र में कार्यरत लोगों के नाम–पते एवं दूरभाष नम्बर।
- लोक संस्कृति के कार्यक्रमों, विभिन्न आयोजनों, पारम्परिक उत्सवों एवं विचार गोष्ठियों की रिपोर्ट।
- लोक संस्कृति से सम्बन्धित प्रकाशनों की जानकारी।
- लोक के बारे में अन्य कोई जानकारी।

कृपया अपनी रचनाएँ, सुझाव एवं जानकारियाँ इस पते पर उपलब्ध कराएँ।

सम्पर्क सूत्र–

डॉ. कालीचरण यादव

बनियापारा, जूना बिलासपुर, छत्तीसगढ़–495 001

फोन– (07752) 223206, 653784 मोबा. 98261–81513

e-mail: kcbilaspur@yahoo.in

प्रसंगवश

कॉपीराइट कानून में बदलाव

हेमंत पाल

गीतकारों और संगीतकारों को खुशमिजाज माना जाता है। लेकिन, अभी ये दोनों ही बहुत दुखी हैं। क्योंकि, उन्हें इस बात का अहसास होने लगा है। कि बॉलीवुड में उनके साथ बौद्धिक शोषण हो रहा है। वे जो गीत फिल्मांकन के लिए रचते हैं, वे बाद में रिंगटोन बनकर घनघनाते हैं या कभी किसी स्टेज पर बजते दिखाई देते हैं। फिल्म के प्रोडयूसर गीतकार और संगीतकार को उनके काम का भुगतान कर सारे अधिकार खरीद लेते हैं। बाद में इनकी टुकड़ों–टुकड़ों में सौदेबाजी होती रहती है। इसका कारण है हमारे देश में 'बौद्धिक सम्पदा कानून' की खामियाँ।

जाने–माने गीतकार स्वानंद किरकिरे का कहना है कि बौद्धिक सम्पदा को लेकर अंतर्राष्ट्रीय कानून काफी सख्त हैं। इस कानून के तहत जब भी उनकी रचना का कहीं इस्तेमाल होता है, गीतकार और संगीतकार को उनका निर्धारित हिस्सा बिना किसी विवाद के मिल जाता है। एक एजेंसी इस पूरे मामले की मॉनीटरिंग करती है। जबकि, भारत में कॉपीराइट का मामला किंतु–परंतु से भरा है। सरकार से हमारी माँग है कि बौद्धिक सम्पदा को लेकर देश के कॉपीराइट कानून में बदलाव किया जाए, ताकि गीतकारों और संगीतकारों को उनका वाजिब हक मिल सके। स्वानंद ने बताया कि जावेद अख्तर ने इस मामले को सरकार के सामने काफी जोरदार ढंग से उठाया है। फिल्म राइटर्स एसोसिएशन भी हमारे साथ हैं। उम्मीद की जा रही है कि संसद के अगले सत्र में मामले पर सरकार कोई पहल करेगी।

उन्होंने मामले की परतें खोलते हुए बताया कि भारत में जो फिल्में बनती हैं उनमें गीत होते हैं, जिन्हें संगीत के साथ पिरोकर फिल्माया जाता है। फिल्म का प्रोडयूसर गीतकार और संगीतकार को इसके लिए भुगतान कर देता है। बात यहाँ तक तो ठीक है, लेकिन फिल्मांकन के लिए गढ़ा गया यह गीत–संगीत बाद में मोबाइल फोन की रिंगटोन बनकर गूंजता रहता है, स्टेज पर गाया और बजाया जाता है। कई बार अलग–अलग तरीके से भी इसका उपयोग होता है। हमारी माँग है कि गीत और संगीत का सृजन कॉपीराइट का मामला है।

स्वानंद का कहना है कि प्रोडयूसर इसका एक मक्सद के लिए खरीदकर इसका इतर उपयोग नहीं कर सकता। वह बौद्धिक सम्पदा है न कि गीत लिखकर या संगीत रचकर भूल जाने की बात है। जब किसी गीत के साथ उसके रचने वाले और संगीतबद्ध करने वाले का संगीतज्ञ का नाम हमेशा चस्पा रहता है, तो उसे रायल्टी में हिस्सा क्यों नहीं मिलना चाहिए?

नवदुनिया में छपा

आप अपनी सदस्यता के बारे में स्वयं जान सकते हैं। आपके पते में सबसे उपर एक संख्या लिखी है। उसकी पहली संख्या सदस्यता क्रमांक है, दूसरी संख्या सदस्यता का माह और तीसरी संख्या सदस्यता का सन। उदाहरण के तौर पर यदि '148/07/08–10' लिखा है तो अर्थ है कि सदस्यता कमांक 148 है। जुलाई माह में सदस्यता ली थी और सदस्यता का प्रारम्भ वर्ष 2008 था समाप्ति का वर्ष '2010' है। कई लोगों के पते में सौजन्य लिखा है, किसी में 'अनिवार्य'। सभी लोग उदारता का परिचय दें तो कृपा होगी।

–राजुरकर राज

विचार आकलन

साहित्य और संस्कृति की मासिक पत्रिका

सहयोग राशि

प्रति अंक	:	20 रुपये
वार्षिक	:	200 रुपये
आजीवन	:	2000 रुपये

सहयोग राशि कृपया मनीआर्डर अथवा 'विचार आकलन' के नाम बैंक ड्राफ्ट से ही भेजें। भोपाल के बाहर के चैक स्वीकार नहीं किये जायेंगे। मनीआर्डर की पर्ची पर सन्देश वाले स्थान पर अपना पूरा पता अवश्य लिखें।

नमूना प्रति के लिए कृपया 20 रुपये के डाक टिकट भेजें।

सम्पादकीय सम्पर्क :
एच–3, उद्धवदास मेहता परिसर,
नेहरू नगर, भोपाल–462003

सम्मान/पुरस्कार

'कादम्बरी' साहित्यकार सम्मान–2010

जबलपुर। संस्कारवानी जबलपुर की साहित्यिक–सांस्कृतिक संस्था 'कादम्बरी' के संस्थापक स्व. पंडित राजेन्द्र तिवारी के 71वें जन्म दिवस के पुनीत अवसर पर देशभर के चुने हुए 29 साहित्यकारों एवं पत्रकारों को पुरस्कृत करने के लिए स्थानीय मानस भवन में एक भव्य सम्मान समारोह आयोजित किया गया, जिसकी अध यक्षता महामंडलेश्वर स्वामी प्रज्ञानन्द जी महाराज ने की। हिन्दी साहित्य की चौबीस विधाओं की 29 सर्वश्रेष्ठ कृतियों को पुरस्कृत किया गया।

कुल पुरस्कृत कृतियों में राउरकेला के नवगीतकार डॉ. मधुसूदन साही की सद्यः प्रकाशित नवगीत कृति 'सपने शैवाल के' तथा श्री श्यामलाल सिंघल की व्यंग्य कृति 'दूल्हों की दुकान' पुरस्कृत हुई। हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के प्रधानमंत्री पं. श्रीधर शास्त्री को हिन्दी सेवा के लिए 21 हजार रुपए एवं मानपत्र भेंट किए गये। पूर्व सांसद एवं वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. रत्नाकर पाण्डेय को 11 हजार तथा डॉ. रामनारायण सिंह 'मधुर', डॉ. रवि शर्मा, सत्यनारायण व्यास को 5–5 हजार रुपए की सम्मान राशि प्रदान की गई। अन्य जिन कृतिकारों को 21–21 सौ रुपए की सम्मान राशि भेंट की गई उनमें डॉ. एम.एस. विनयचंद्रन, डॉ. भैरूंलाल गर्ग, डॉ. देवेन्द्रनाथ साह, डॉ. सतीशराज पुष्करणा, प्रभु त्रिवेदी आदि प्रमुख थे।

इससे पूर्व वरिष्ठ पत्रकार डॉ. राजकुमार तिवारी 'सुमित्र' की अध्यक्षता में 'साहित्य में यथार्थ और आदर्श का समन्वय' विषय पर राष्ट्रीय साहित्य संगोष्ठी का आयोजन किया गया। तृतीय सत्र में प्रो. राजेन्द्र तिवारी 'ऋषि' की अध्यक्षता में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया।

मूर्तिदेवी पुरस्कार

नई दिल्ली। हिंदी के प्रसिद्ध लेखक एवं चिंतक डॉ. रघुवंश को भारतीय ज्ञानपीठ के प्रतिष्ठित 22वें मूर्तिदेवी पुरस्कार के लिए चुना गया है, जबकि 23वॉं मूर्तिदेवी पुरस्कार मलयालम के यशस्वी कवि अविकतम अच्युतन नम्बूदिरि को दिया जाएगा। भारतीय ज्ञानपीठ के निदेशक रवीन्द्र कालिया के अनुसार 30 जून 1921 को हरदोई में जन्मे डॉ. रघुवंश को यह पुरस्कार उनकी पुस्तक 'पश्चिमी भौतिक संस्कृति का उत्थान और पतन' के लिए दिया जाएगा।

ताबिश को 'सुल्तानपुर रत्न'

सुल्तानपुर। फिल्म संवाद लेखक और शायर ताबिश सुल्तानपुरी को 'सुल्तानपुर रत्न' प्रदान किया गया। यह सम्मान उन्हें मरणोपरांत दिया गया। इससे पहले यह अलंकरण कवि त्रिलोचन और मजरूह सुल्तानपुरी को दिया जा चुका है। 'बहू बेगम' और 'ताज महज' जैसी चर्चित फिल्मों के संवाद लेखक ताबिश एक बेहतरीन शायर भी थे। उनका संग्रह 'दोपहर का फूल' काफी सराहा गया था।

प्रो. उपाध्याय को 'भाषारत्न' सम्मान

कोलकाता। विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ, भागलपुर, बिहार के तत्वावधान में उसके पन्द्रहवें दीक्षान्त समारोह के अवसर पर हिन्दी की उल्लेखनीय सेवाओं एवं प्रकाशित कृतियों के आधार पर प्रो. श्यामलाल उपाध्याय को 'भाषारत्न' सारस्वत सम्मान की उपाधि से विभूषित किया गया। समारोह की अध्यक्षता स्थानीय विधायक सम्मान्य यशस्वी अरुण मण्डल ने की।

बात समन्दर से

कविता संग्रह

अंजना मिश्र

अंजना मिश्र की कविताएँ एक संवाद हैं। वृहद आइने के सामने बैठे किसी व्यक्ति का नहीं, वरन् किसी आत्मा का स्वयं से संवाद, एक लम्बा संवाद। उस संवाद में है खुद को देखने, जानने, समझने एवं व्यक्त करने का प्रयास।

जगदीश तोमर

अनुभव प्रकाशन

ई–8, लाजपत नगर, साहिबाबाद,

गाजियाबाद–5

वर्दी में गुलज़ार के जज़्बात

वर्दी में हमदर्दी नहीं चलती

दैनिक जागरण में पवन श्रीवास्तव

एक नौकर, एक रुतबा, एक वर्दी : गुलज़ार

'हम नहीं थे आईने में, बाकी तीनों थे
एक नौकर, एक रुतबा, एक वर्दी थी।'

वर्दी के सम्बन्ध में यह नजरिया है गुलज़ार का। टेलीफोन पर गुलज़ार से हुई बातचीत में उन्होंने कहा कि वर्दी से स्टेटस का पता चलता है और इम्प्लाइड मैन की यह पहचान होती है। वर्दी का यह आइडिया मेरे अकेले का नहीं था, बल्कि यह आइडिया प्रख्यात फोटोग्राफर विवेक रानाडे का था। उन्होंने ही विभिन्न वर्दियों का चयन किया और फोटोग्राफर की। अच्यूत पल्लव ने कैलीग्राफी की और इन वर्दियों पर मैंने अपने विचारों को कलमबद्ध किया। अतुल शिरोडकर ने इसका प्रोडक्शन किया। हम चारों के मंथन और मेहनत से वर्दी का यह रूप उभरकर सामने आया है।

अधिकांश विभागों में व्यक्ति की पहचान उसकी वर्दी से होती है। चाहे वह पुलिस की वर्दी हो, टिकट कलेक्टर, प्यून, गार्ड या फिर नर्स की। इस वर्दी के पीछे पहनने वालों के कई जज़्बात भी छिपे होते हैं। इन जज़्बात को कलमबद्ध किया है प्रसिद्ध शायर और फिल्मकार गुलज़ार ने। उसका अंदाज भी खास है। उन्होंने कैलेंडर के माध्यम से इन भावनाओं को एक ख़ास शक्ल दी है। निःशक्तों के प्रति संवेदनशील गुलज़ार ने यह कैलेंडर निःशक्त जनसेवा में लगी संस्था आरुषि को भेंट किया है।

अक्सर ऐसा होता है कि हम व्यक्ति का नाम नहीं जानते, लेकिन आवश्यकता पर उसे पुकारना जरूरी होता है। बिना नाम के सम्बोधन कैसे किया जाए, इस झिझक को दूर करती है उस व्यक्ति की वर्दी, जो उसे उसकी पहचान दिलाती है। सिपाही की वर्दी देखकर जहाँ पुलिस का संबोधन सामने आता है, वहीं किसी अस्पताल में सफेद ड्रेस में नर्स का, तो रेल्वे स्टेशन पर काले कोट और पैंट में टीसी का बोध सामने आ जाता है। विभिन्न लोगों की वर्दियों को गुलज़ार और फोटोग्राफर विवेक रानाडे ने ख़ास अंदाज़ में पेश किया है।

नर्स : सिस्टर

पति को मैं भी 'डॉक्टर–डॉक्टर' कहके बुलाती हूँ,
हस्पताल में वो भी मुझको 'सिस्टर' कहते हैं।

टीसी : सीटी

इस उम्र में अब कुछ थोड़ी शर्म भी आती है,
हमको देख के गाड़ी अब भी सीटी बजाती है।

प्यून : फाईल

बॉस तो बरसों बैठते हैं इन पर,
हम ही फाईल चलाते रहते हैं।

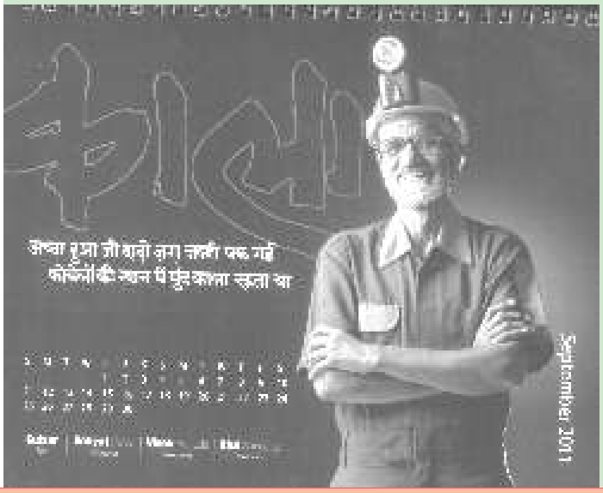

खदान कर्मी

अच्छा हुआ जो दाढ़ी जरा जल्दी पक गई,
कोयलों की खान में मुंह काला रहता था।

नक्श लायलपुरी पर
आज तक बाक़ी है बीस रुपये का कर्ज़

गीतकार नक्श लायलपुरी की नज्मों का एक संकलन आया है. 'आँगन–आँगन बरसे गीत' नाम की यह किताब उर्दू में है। पिछले 50 से भी ज्यादा वर्षों से हिन्दी फिल्मों में उर्दू के गीत लिख रहे नक्श लायलपुरी एक अच्छे शायर हैं. कविता को पूरी तरह से समझते हैं लेकन जीवनयापन के लिए फिल्मी गीत लिखने का काम शुरू कर देने के बाद उसी दुनिया के होकर रह गए. रस्मे उल्फत निभाते रहे और हर मोड़ पर सदा देते रहे. उनकी कुछ नज्मों के टुकड़े तो आम बोलचाल में मुहावरों की शक्ल अख्तियार कर चुके हैं. नक्श लायलपुरी ने भारत के बँटवारे के दर्द को बहुत ही करीब से महसूस किया था. 1947 में वे शरणार्थियों के एक काफिले के साथ उस पार के पंजाब से भारत में पैदल दाखिल हुए थे. कुछ दिन रिश्तेदारों के यहाँ जालंधर में रहे लेकिन वहां दाना–पानी नहीं लिखा था. उनके पिता जी इंजीनियर थे.

लखनऊ में किसी इंजीनियर दोस्त से संपर्क किया तो उसने कहा कि लखनऊ आ जाओ. वहीं ऐशबाग में एक सरकारी प्लाट मिल गया. सड़क की तरफ तो कारखाना बना लिया गया और पीछे की तरफ रहने का इंतजाम कर लिया गया. इसी लखनऊ शहर से भाग कर नक्श लायलपुरी मुंबई में अपनी किस्मत आजमाने आये थे. हालांकि उन्होंने अपना पहला फिल्मी गाना निर्माता जगदीश सेठी की फिल्म के लिए 1951 में लिखा था लेकिन वह फिल्म रिलीज नहीं हुई. 1952 में दूसरी फिल्म जग्गू के लिए गाने लिखे जो पसंद किये गए. उन्हें गीतकार के रूप में पहचान 'तेरी तलाश में' नाम की फिल्म से मिली. इस फिल्म में आशा भोंसले ने उनके गीत गाये थे. एक बार नाम हो गया तो काम मिलने लगा और गाड़ी चल पड़ी.

हिन्दी फिल्मों के इस शायर की यात्रा बहुत ही मुश्किल थी. सबसे बड़ी मुसीबत तो तब आई जब उन्होंने अपने बचपन में सआदत हसन मंटो की किसी कहानी में पढ़ा कि जब पंजाबी इंसान उर्दू बोलता है तो लगता है कि कोई झूठ बोल रहा है. शायद मंटो साहब ने उच्चारण के तरीके अलग होने की वजह से यह बात कही हो. नक्श लायलपुरी पंजाबी हैं और उसी दिन उन्होंने तय कर लिया कि वे उर्दू ही बोलेगें, झूठ कभी नहीं बोलेगें. उर्दू पढ़ने और बोलने में उन्होंने मेहनत की और उर्दू के नामवर शायर बन गए. मुंबई में उनके संघर्ष का शुरुआती दौर भी मामूली नहीं हैं. घर से भाग कर मुंबई आये थे और जब कल्याण स्टेशन पर उतरे तो जेब में एक चवन्नी बची थी. उन दिनों कोयले के इंजन से चलने वाली गाड़ियां होती थीं. लखनऊ से दिल्ली तक की तीन दिन की यात्रा में कपड़े एकदम काले हो गए थे.

दिमाग में कहीं से यह बैठा था कि जब किसी शहर में रोजगार की तलाश में जाओ तो खाली पेट नहीं जाना चाहिए, भूख भी लगी थी, दिन के 12 बजे थे, उन दिनों कल्याण स्टेशन के प्लेटफार्म पर छत नहीं थी. चार आने की पूरियां खरीद लीं और ज्यों ही पहला निवाला मुंह में डालने के लिए उठाया कि हाथ का दोना चील झपट कर ले गयी. भूखे ही शहर में दाखिल हुए. दादर स्टेशन के पास खस्ता हाल टहल रहे थे कि सामने से एक बुजुर्ग सरदार जी आते नजर आये. उनसे पूछ लिया कि यहाँ कोई धर्मशाला है क्या? उन्हीं कोयले से सने कपड़ों और भूखे नौजवान को देख कर शायद उन्हें तरस आ गयी और उन्होंने माटुंगा के गुरुद्वारे का पता बता दिया. लेकिन वहां सिर्फ आठ दिन रह सकते थे.

वहीं एक सिख नौजवान था, जब उसको पता लगा कि यह खस्ता हाल इंसान शायर है तो वह प्रभावित हुआ और उसने साबुन और लुंगी दी और कहा कि अपने कपड़े तो धो लो. जाते वक्त उसने बीस रूपये भी दिए. मना करने पर उसने कहा कि जब हो जाएँ तो वापस दे देना. वह कर्ज आज तक बाकी है.

शेष अगले पृष्ठ पर

मुकेश जैन सिंधिया के निज सचिव बनेंगे

भोपाल। मप्र कॉडर के आईपीएस अधिकारी मुकेश जैन की सेवाएं केन्द्र सरकार को सौंप दी गई हैं। उन्हें केन्द्रीय वाणिज्य व उद्योग राज्यमंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया का निज सचिव पदस्थ किया जा रहा है। मुकेश जैन वर्तमान में पुलिस मुख्यालय भोपाल में पुलिस महानिरीक्षक अपराध अनुसंधान विभाग में पदस्थ थे। काफी समय से उनके केन्द्र में पदस्थापना संबंधी आदेशों की प्रतीक्षा की जा रही थी, बीत दस जनवरी को केन्द्रीय गृह मंत्रालय ने उनकी प्रतिनियुक्ति हेतु म.प्र. शासन को लिखा था।

सलाहकार समिति में सदस्य

इंदौर। भारत सरकार वित्त मंत्रालय आर्थिक कार्य विभाग की सूचना के अनुसार हिन्दी परिवार, इंदौर के अध्यक्ष श्री हरेराम वाजपेयी को विभाग की हिन्दी सलाहकार समिति का सदस्य नामित किया गया है। यह पहला अवसर है जबकि इंदौर से किसी व्यक्ति को यह अवसर प्राप्त हुआ है। श्री मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति के प्रचार मंत्री श्री हरेराम वाजपेयी यूको बैंक से राजभाषा अधिकारी पद से सेवानिवृत्त हुए।

'लोकरंग' में पर्स चोरी

भोपाल। भोपाल में चल रहे 'लोकरंग' में दुष्यन्त कुमार स्मारक पाण्डुलिपि संग्रहालय की संयुक्त निदेशक श्रीमती करुणा राजुरकर का पर्स चोरी हो गया। लोकरंग में लगे स्टॉल्स में से एक पर वे कुछ सामान खरीद रही थीं कि किसी ने उनके पर्स पर हाथ साफ कर दिया। उन्हें पता तब चला जब वे सामान का मूल्य चुकाने के लिए पर्स देखने लगी। पर्स में नगद राशि के अलावा एटीएम कार्ड और कुछ अन्य ज़रूरी कागज़ भी थे।

पिछले पृष्ठ से आगे नक्श लायलपुरी

किस्मत ने पलटा खाया और सड़क पर लाहौर के पुराने परिचित दीपक आशा मिल गए. वे एक्टर थे और अब मुंबई में ही रह रहे थे. अपने घर ले गए और फिर किसी शरणार्थी कैम्प में रहने का इंतजाम करवा दिया. उसके बाद अपना यह शायर मानवीय संवेदनाओं को गीतों एक माध्यम से सिनेमा के दर्शकों तक पंहुचाता रहा. आज बुजुर्ग हैं लेकिन शान से अपना बुढ़ापा बिता रहे हैं. आज भी उनके चाहने वालों का एक वर्ग उन्हें मिलता जुलता रहता है.

लेखक शेष नारायण सिंह जाने–माने स्तंभकार, पत्रकार और टिप्पणीकार हैं.
भड़ास फार मीडिया डॉट कॉम से आभार सहित

अरुंधति के बंगला का मामला कमिश्नर कोर्ट में पहुंचा

होशंगाबाद। प्रसिद्ध लेखिका अरुंधति राय के पचमढ़ी में स्थित बंगला का मामला अब कमिश्नर कोर्ट में पहुंच गया है। मामले की सुनवाई की तारीख अभी तय नहीं हुई है। वकील ने कई महत्वपूर्ण बिंदुओं को आधार बताकर अपील दायर की है। हिल स्टेशन पचमढ़ी में राय के बंगले को लेकर चल रहे मामले में पिपरिया एसडीएम कोर्ट ने हाल ही में निर्णय दिया था, जिसमें नामांतरण को अवैध माना गया है। इस निर्णय के खिलाफ वकील सुशील गोयल ने कमिश्नर कोर्ट में 12 आधारों पर अपील दायर की है। इनमें से कुछ खास आधार हैं।

दीर्घआयु
हाईटेक होम्योपैथिक क्लीनिक

डॉ. देवेश कुमार वास्त्री
बी.एस.सी.बी.एच.एस.,सी.एस.डी(मुम्बई) एवं
डिप्लोमा सुजोक (एक्युप्रेशर एवं एक्युपंचर) मास्को

डॉ. हेमलता वास्त्री
बी.एस.सी.,बी.एच.एम.एस.
सी.जी.ओ (मुम्बई) स्त्री रोग

विशेष योग्यता

- पथरी सभी प्रकार की
- प्रोस्टेट, मूत्ररोग, शूगर
- मासिक संबंधी रोग (अनियमित, Amenorrhoea, Dysmanorrhoea) सफेद पानी (ल्युकोरिया)
- त्वचा संबंधी रोग (मुहासे, एक्जीमा, खुजली)
- यौन/गुप्त रोग
- अस्थमा, एलर्जी, साइनस
- सभी प्रकार की गठानें (स्तन, गर्भाशय)
- पाइल्स, फिशर
- बालों का झड़ना
- सफेद दाग (ल्युकोडरमा, Vitlllgo)
- बच्चों के रोग (भूख न लगना, पेट में कृमि, चिड़चिड़ापन)

समय :– 9:30 से 1 बजे तक सायं–6 से 9 तक (रविवार 9:30 से 2)
नोट : स्त्री रोग विशेषज्ञ से मिलने का समय अवश्य लेंवे।

क्लीनिक–शॉप नं. 16, कौरव समाज भवन,
सरस्वती नगर, जवाहर चौक, भोपाल

'आवां' का नाट्य मंचन

कोलकाता। प्रसिद्ध हिन्दी नाट्य संस्था 'अभिनय' ने प्रख्यात उपन्यास लेखिका चित्रा मुद्गल के बहुचर्चित उपन्यास 'आवां' का नाट्य मंचन कोलकाता के सुप्रसिद्ध रवीन्द्र सदन के 'शिशिर मंच' सभागार में किया। खराब मौसम और भारी बरसात के बावजूद सभागार दर्शकों से खचाखच भरा हुआ था। शहर के बुद्धिजीवी, कलाकारों, साहित्यकारों एवं लेखकों की भारी तादाद में मौजूदगी 'आवां' के नाट्य मंचन के प्रति लोगों की उत्सुकता के सैलाब को दर्शा रही थी।

544 पृष्ठों के उपन्यास को दो–सवा–दो घंटे की प्रस्तुति में समेटना कुछ कम कष्टसाध्य कार्य न था, जिसे लगभग दो वर्षों की कठिन मेहनत के पश्चात निर्देशक प्रताप जायसवाल व नमिता जायसवाल ने इस खूबी के साथ अंजाम दिया कि सभागार में बैठे सभी दर्शक चमत्कृत हो गए। इस नाटक की प्रस्तुति में 'आवां' के स्त्री विमर्श से संबंधित पक्ष को पूरी संजीदगी से दर्शाया गया।

इस अवसर पर 'अभिनय' संस्था द्वारा पुस्तक की लेखिका चित्रा मुद्गल एवं प्रकाशक महेश भारद्वाज का अभिनन्दन किया गया।

समीक्षा गोष्ठी व काव्य पाठ सम्पन्न

खण्डवा। नव वर्ष के शुभारंभ अवसर पर खण्डवा के सुपरिचित गीतकार अशोक गीते के नवगीत संग्रह 'लौटे पखेरू शाम के' पर समीक्षा–गोष्ठी का आयोजन सम्पन्न हुआ।

समीक्षा गोष्ठी की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार श्री गोपीनाथ कालभोर ने की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कवि डॉ. प्रतापराव कदम थे तथा विशिष्ठ अतिथि के रूप में डॉ. नीरज दीक्षित ने भागीदारी की। श्रीमती हेमलता उपाध्याय ने समीक्षित ग्रंथ के प्रथम गीत सरस्वती वंदना को सस्वर प्रस्तुत किया।

गोष्ठी में श्री सुधीर देशपाण्डे, श्री ललितनारायण उपाध्याय, श्री राजेन्द्र पाण्डेय ने पुस्तक पर विचार व्यक्त किए।

अब सीखें 'गजल' लिखना और समझना

भोपाल। मध्यप्रदेश उर्दू अकादमी में शायरी की लोकप्रिय विधा ग़ज़ल के संबंध में बुनियादी बातें सिखाने के लिए जल्द ही सप्ताह में एक दिन की कक्षा लगाई जाएगी। 'ग़ज़ल कैसे लिखें और समझें' प्रशिक्षण के लिए आवेदन पत्र जमा करने की अंतिम तिथि 28 फरवरी है। प्रशिक्षण निःशुल्क रहेगा। केवल प्रवेश शुल्क 50 रुपए आवेदन पत्र के साथ जमा होंगे। किसी भी आयु वर्ग के लोग इस प्रशिक्षण का लाभ उठा सकते हैं। अकादमी की सचिव नुसरत मेहंदी के अनुसार ग़ज़ल पढ़ना, लिखना और सुनना अधिकतर लोगों को अच्छा लगता है, लेकिन शब्द, उनका सही प्रयोग, अदायगी, रदीफ, काफिया, बहर, वजन (मीटर) के बारे में जानकारी न होने से अक्सर न तो लिख पाते हैं और न उसका भरपूर आनंद उठा पाते हैं। इन सब बारीकियों को सिखाने के लिए 'ग़ज़ल कैसे लिखें और समझें' कक्षा प्रारंभ की जा रही है।

पवैया के नाम पर बनेगा ग्रंथालय

भोपाल। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी व कवि स्व. राजमल पवैया के नाम से प्रस्तावित महावीर इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस कॉलेज में स्व. राजमल पवैया के नाम से ग्रंथालय की स्थापना की जाएगी। वहाँ उनकी प्रतिमा भी लगेगी। यह घोषणा स्व. पवैया के निवास पर हुई श्रद्धांजलि सभा में कॉलेज के सचिव डॉ. राजेश जैन ने की। ज्ञात हो कि 26 जनवरी को श्री पवैया का निधन हो जाने पर एलएन मेडिकल कॉलेज को उनकी देहदान की गई थी। सभा में ग्रंथालय के लिए कोहेफिजा जैन समाज की ओर से अध्यक्ष महेन्द्र चौधरी ने एक लाख, कालेज के चेयरमैन सुनील जैन द्वारा 21 हजार व दीवानगंज कुंदकुंद ट्रस्ट के अशोक जैन द्वारा 51 हजार की राशि देने की घोषणा की गई।

आप अपनी सदस्यता के बारे में स्वयं जान सकते हैं। आपके पते में सबसे उपर एक संख्या लिखी है। उसकी पहली संख्या सदस्यता कमांक है, दूसरी संख्या सदस्यता का माह और तीसरी संख्या सदस्यता का सन। उदाहरण के तौर पर यदि '148/07/08–10' लिखा है तो अर्थ है कि सदस्यता कमांक 148 है। जुलाई माह में सदस्यता ली थी और सदस्यता का प्रारम्भ वर्ष 2008 था समाप्ति का वर्ष '2010' है।

'आक्टेव' का भाषा कवि सम्मेलन

भोपाल। साहित्य अकादमी दिल्ली के सहयोग से उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने पूर्वोत्तर राज्यों के उत्सव 'ऑक्टेव' में एक अनूठा कवि सम्मेलन कराया। हिन्दी प्रदेश के हृदय स्थल भोपाल में अरूणाचल प्रदेश, सिक्किम, मणिपुर, त्रिपुरा और गुवाहटी के कवियों ने अपनी–अपनी बोली व भाषा में कविताएँ पढ़ीं। इन्हें समझना कठिन न था क्योंकि शब्दों की ध्वनियाँ ही बहुत कुछ कह देती हैं। साथ में लोकप्रिय कवि अशोक चक्रधर हिन्दी तर्जुमा भी पेश कर रहे थे। सिक्किम से आई नेपाली कवयित्री सुधा एम राई, प्रेम और कोमल भावनाओं की कविताएँ रचती हैं। आधुनिक हिन्दी कविताओं में जो बिम्ब दिखाई पड़ते हैं वही बिम्ब उनकी कविताओं में भी उनके अपने अंदाज से निर्मित थे। उन्होंने बताया कि वह महिलाओं की पीड़ा को अपनी कविताओं में उकेरती हैं। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश की औरत की जो पीड़ा है, वही पीड़ा सिक्किम की महिला की भी हो सकती है, महिलाओं की स्थिति कमोबेश समान है, भौगोलिक परिवेश भले अलग हो। सुधा पर्यावरण को भी अपनी कविताओं का विषय बनाती हैं। इन्होंने खलील जिब्रान के प्रेम पत्रों का अनुवाद किया है। चूंकि वे नेपाली भाषा में लिखती हैं, जब उनसे पूछा गया कि उनके पूर्वज नेपाल के थे जो सिक्किम में बस गए? उत्तर में उन्होंने बड़ा रूचिकर खुलासा किया कि जैसे भारत में रहने वाले मुसलमान पाकिस्तानी नहीं हैं, वैसे ही भारत में रहने वाले 'नेपाली' जरूरी नहीं कि वे नेपाल के हों। वे सिक्किम की निवासी हैं मगर वे नेपाली जनजाति की हैं।

कविताओं के हिन्दी अनुवाद के साथ डॉ. अशोक चक्रधर

हिन्दी में दक्ष जमुना बिनी

मध्यम कद की युवती जमुना बिनी को देखकर कोई कह नहीं सकता कि पूर्वोत्तर के पारम्परिक वेशभूषा और बेहद अहिन्दी भाषी दिखाने वाली जमुना काफी शुद्ध हिन्दी बोलती व लिखती हैं। वे अरूणाचल प्रदेश की हैं और ईटानगर विश्वविद्यालय में हिन्दी साहित्य पढ़ाती हैं। जमुना कहती हैं कि जब मैं दसवीं में थी तो मेरे सहपाठी कहते थे कि हिन्दी के पेपर में कुछ भी लिख दो, हम तो 'नार्थ–ईस्ट' के हैं, हमें पास कर दिया जाएगा। तभी मैंने ठानी की मुझे इसी भाषा में आगे बढ़ना है। साहित्य में मेरी रुचि थी और माध्यम मैंने हिन्दी को चुना। जमुना इन दिनों मोहन राकेश और गिरिश कर्नाड की रचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन कर रही हैं। वे 'निशि' बोली में भी कविताएँ लिखती हैं।

आधुनिक प्रगतिशील कवि भुबोनसाना

मणिपुर के राजकुमार भुबोनसाना 1969 से अपनी भाषा में कविताएँ रच रहे हैं। उनकी कविताओं में प्रगतिशील हिन्दी कविता के स्वर सुनाई देते हैं। वंचितों की ओर से कविता लिखने वाले भुबोनसाना कहते हैं कि मैं आज तक समझ नहीं पाया कि आखिर मैं कविता क्यों लिखता हूँ। शायद परिस्थितियाँ मुझे बेचैन करती हैं। जैसे दुनिया भर के कवि व्यवस्था के खिलाफ खिलते हैं, ये भी भ्रष्ट तंत्र और सिस्टम पर अपनी कविताओं में चोट करते हैं। मणिपुर की आयरन लेडी इरोम शर्मीला जो दस सालों से भूख हड़ताल पर हैं ताकि वहाँ के लोगों को अर्द्धसैनिक बलों के अत्याचार से छुटकारा मिल जाए, उन्हें आजाद भारत में खुद को स्वतंत्र नागरिक महसूस करने का मौका मिले। भुबोनसाना भी मणिपुरी लोगों की इस पीड़ा से उद्वेलित होते हैं। संदर्भ उनके राज्य का है, मगर सिविल लिबर्टी और मानवता की बात आखिर सार्वभौमिक है, जो उनकी कविताओं में परिलक्षित होती है।

नवदुनिया में आशा सिंह ने लिखा

अन्टार्कटिका के रोचक अनुभवों की शाम

संग्रहालय ने किया प्रकाश का अभिनन्दन

भोपाल। दक्षिणी ध्रुव पर अन्टार्कटिका में 23 लोगों के दल में शामिल तेरह महीने के वैज्ञानिक शोध के बाद भोपाल लौटे युवा वैज्ञानिक प्रकाश खातरकर ने अपने रोचक और अविस्मरणीय अनुभव साझा किये। दुष्यन्त कुमार स्मारक पाण्डुलिपि संग्रहालय में उनका अभिनन्दन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि संग्रहालय के संरक्षक एवं मध्यप्रदेश शासन में प्रमुख सचिव डॉ. पुखराज मारू थे एवं विशेष अतिथि के रूप में अतिरिक्त मुख्य वन संरक्षक श्री ए.के. सिंह एवं पूर्व आईएएस अधिकारी श्री मान दाहिमा उपस्थित थे।

अभिनन्दन समारोह में आरम्भ में निदेशक राजुरकर राज ने संग्रहालय की अभिनव योजनाओं की जानकारी देते हुए बताया कि संग्रहालय अपनी साहित्येतर गतिविधियों से समाज के अन्य लोगों को भी साहित्य से जोड़ने काम कर रहा है। केवल साहित्यिक आयोजनों से सिर्फ साहित्यकार ही संग्रहालय आ सकेंगे, जबकि अन्य गतिविधियों से जनसामान्य भी संग्रहालय से जुड़ रहा है।

संग्रहालय की प्रवर परिषद के संयोजक श्री नरेन्द्र दीपक ने स्वागत वक्तव्य दिया। प्रबन्ध परिषद के अध्यक्ष श्री रामराव वामनकर ने श्री प्रकाश खातरकर का परिचय दिया। संग्रहालय द्वारा आयोजित इस समारोह में प्रकाश खातरकर का अभिनन्दन किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. पुखराज मारू ने कहा कि इस तरह के उत्साही युवक ही देश और समाज का भविष्य होते हैं। उन्होंने प्रकाश को इसी तरह काम करते रहने की शुभकामनाएँ दी। श्री ए.के. सिंह ने कहा कि काम के प्रति निष्ठा ही व्यक्ति को अपनी मंज़िल पर पहुँचाती है। श्री मान दाहिमा ने कहा कि सरकार ऐसे उत्साही लोगों का सार्थक लाभ ले सकती है।

श्री प्रकाश खातरकर ने स्लाइड शो के माध्यम से अन्टार्कटिका के मौसम, परिस्थितियों और अनुभवों को साझा किया। उन्होंने उपस्थित लोगों के सावालों के जवाब भी दिये। श्री प्रकाश ने कहा कि 'जब मैं भोपाल में सूर्यग्रहण पर काम कर रहा था तो किसी ने कहा कि यह शुभ नहीं होता। तब मुझे लगा कि जिसके जीवन में गरीबी का ग्रहण हो, उससे बड़ा और कौन सा ग्रहण हो सकता है।' उल्लेखनीय है कि श्री प्रकाश खातरकर बैतूल जिले के छोटे से गाँव धाबला के निवासी हैं। वे अत्यन्त विपन्न परिस्थितियों में रहे। उनके गाँव में यह भी अनुमान नहीं था कि प्रकाश कहाँ जा रहा है। प्रकाश के शब्दों में 'यदि उन्हें पता होता कि अन्टार्कटिका में छै माह रात और छै माह का दिन होता है एवं वहाँ का तापमान माइनस साठ डिग्री से भी नीचे होता है, जहाँ जीवन अत्यन्त दुर्लभ है, तो वे मुझे कभी न जाने देते। मैंने तो केवल यह बताया कि मैं विदेश जा रहा हूँ। और सच पूछिये तो मुझे भोपाल से अपने परिजन जब विदा कर रहे थे तो मुझे भी लग रहा था कि ये सारे चेहरे मैं आखरी बार देख रहा हूँ।'

श्री प्रकाश खातरकर ने लगभग एक घंटे तक स्लाइड शो के माध्यम से अन्टार्कटिका के बारे में बताया। सभी ने बड़ी उत्सुकता से न केवल उनके अनुभव सुने बल्कि जिज्ञासाएँ भी रखी, जिनका प्रकाश ने उचित समाधान भी किया।

अन्त में श्री राजेन्द्र जोशी ने आभार व्यक्त किया।

प्रस्तुति : करुणा राज

भारत भवन में हुआ लोकार्पण का अभिनव प्रयोग

भोपाल। भारत भवन की अभिरंग शाला में एक अनूठा आयोजन हुआ। फिल्म और प्रकाशन से जुड़ी संस्था सीजन ग्रे की पुस्तक 'मुझ पर भरोसा रखना' का विमोचन कुछ अलग ही अंदाज में किया गया। मंच को सूखे पत्तों से आकर्षक ढंग से सजाया गया। विश्व प्रसिद्ध चित्रकार विन्सेंट वान गॉग ने अपने भाई थियो को जो पत्र लिखे थे, उन्हीं का हिंदी अनुवाद इस पुस्तक के माध्यम से राजुला शाह ने पेश किया। इस विमोचन कार्यक्रम में कवि राजेश जोशी, साहित्यकार रामप्रकाश त्रिपाठी और रंगकर्मी स्वस्तिका चक्रवर्ती ने विमोचित पुस्तक के कुछ पत्रों का पाठ किया।

उनके द्वारा पुस्तक के अंशों का पाठ ही उसका विमोचन था। पाठ के इस अनूठे कार्यक्रम का मंच आकल्पन और प्रकाश डिजाइन शम्पा शाह और रंगकर्मी अनूप जोशी द्वारा की गई। पुस्तक के अंशों का पाठ के दौरान लघु फिल्म का प्रदर्शन भी किया गया, जिसका संचालन अर्घ बसु ने किया।

पीपुल्स समाचार में छपा

कैलेण्डर का लोकार्पण सम्पन्न

भोपाल। म.प्र. शासकीय कर्मचारी एकता रंगमंच भोपाल का सांस्कृतिक एवं साहित्यिक संस्था का वर्ष 2011 का कैलेण्डर गृहमंत्री श्री उमाशंकर गुप्ता ने लोकार्पण किया। श्री गुप्ता ने कैलेण्डर प्रकाशित किये जाने पर संस्था के पदाधिकारियों को बधाई दी। संस्था ने गृह मंत्री को अपना दस सूत्रीय मांग पत्र भी प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर संस्था के पदाधिकारी सुमित द्विवेदी, युगेश शर्मा, ए.आर. खरे, भानुप्रकाश तिवारी, एस.आर. बाथम, संजय भोसकर, लक्ष्मीनारायण शर्मा, अखिलेश वर्मा, अफसर जहाँ, चन्द्रभान राही, आभा पाण्डे, जया ठाकुर, लालजीराम मीणा आदि उपस्थित थे।

काव्य संग्रह–सोचो खूब सोचो

रतलाम। युवा कवि संजय परसाई 'सरल' की कविताओं की पुस्तक है 'सोचो खूब सोचो।' साहित्य अकादमी, म.प्र. संस्कृति परिषद भोपाल के सहयोग से प्रकाशित हुई है। पाठकों को इससे पहले भी चार युवा कवियो के संकलन 'नन्हीं बून्दों का समंदर' में उनकी रचनाएं देखने–पढ़ने को मिल चुकी हैं। संजय वर्षों से साहित्य–सेवा में रत हैं। वर्तमान में भी उनका लेखन–पठन से ही गहरा रिश्ता है। उनकी रचना भाषा बेहद सरल है। मन को अंदर तक जाकर स्पर्श करती है। अब तक की लेखन–यात्रा के बारे में उनका कहना है कि 'मैं तो अंतरात्मा की गहराईयों में उठती भूली–बिसरी यादों को समेटता रहा और उन्होंने कब कविताओं का रूप ले लिया, आभास ही नहीं हुआ।' सौ रुपए मूल्य का यह काव्य संग्रह एक अत्याकर्षक पुस्तक के रूप में सामने आता है। इसका प्रकाशन 'अतः प्रकाशन, ई–2/216, अरेरा कालोनी, भोपाल' ने किया है।

बैरागी के व्यक्तित्व पर पुस्तक लोकार्पित

भोपाल। राष्ट्रीय पर्व गणतंत्र दिवस पर देश के सुविख्यात गीतकार डॉ. गोपालदास नीरज ने प्रसिद्ध कवि एवं राज्यसभा के पूर्व सदस्य श्री बालकवि बैरागी के व्यक्तित्व पर एकाग्र कृति 'नन्दा बाबा : फ़कीर से वज़ीर' का लोकार्पण किया।

वरिष्ठ साहित्यकार एवं दुष्यन्त कुमार स्मारक पाण्डुलिपि संग्रहालय के संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री राजेन्द्र जोशी द्वारा श्री बैरागी से अपने चार दशक से भी अधिक निकट सम्पर्कों के संस्मरणों पर लिखी पुस्तक 'नन्दा बाबा : फ़कीर से वज़ीर' दिल्ली के सामयिक प्रकाशन ने प्रकाशित की है। श्री नीरज ने कृति लोकार्पित करते हुए श्री बैरागी को 'अहंकार रहित राष्ट्रीय चेतना के एक महत्वपूर्ण कवि' की संज्ञा दी।

देहावसान साहित्य–जगत की विनम्र श्रद्धांजलि

रेणु जी की पत्नी का देहावसान

पटना। लोकप्रिय आंचलिक साहित्यकार स्व. फणीश्वरनाथ रेणु जी की पत्नी लतिका जी का 13 जनवरी को बिहार के अररिया जिले के औराही हिंगना में देहावसान हो गया। वे 85 वर्ष की थीं। वे विगत कुछ समय से बीमार थीं और दो सालों से रेणु के जन्मा स्थान रेणु गाँव में रहती थीं। लतिका जी रेणु जी की तीसरी पत्नी थी। 1954 में वे परिणय सूत्र में बंधे थे।

प्रभाष जी की माँ का निधन

इंदौर। सुविख्यात दिवंगत पत्रकार श्री प्रभाष जोशी की माताजी श्रीमती लीलाबाई जोशी का इंदौर में 17 जनवरी को निधन हो गया। कुछ ही दिनों पहले उन्होंने अपनी उम्र के सौ साल पूरे किये थे। उनके परिवार में पाँच बेटे और पाँच बेटियां थीं. उनके दो बेटों का निधन हो चुका है।

कृपाराम अचानक

इंदौर। श्री मध्यभारत हिन्दी समिति के सम्मानीय सदस्य, हिन्दी और बुंदेली के कवि श्री कृपाराम अचानक का 10 जनवरी 2011 को निधन हो गया। वह 70 वर्ष के थे।

विजयदत्त श्रीधर को मातृ–शोक

भोपाल। वरिष्ठ पत्रकार एवं माधवराव सप्रे समाचार पत्र संग्रहालय के निदेशक श्री विजयदत्त श्रीधर की माताजी कृष्णदेवी का 23 जनवरी को बोहानी में निधन हो गया। वे 85 वर्ष की थी। श्री श्रीधर का पता है – 100/42, शिवाजी नगर, भोपाल। दूरभाष 2552868 एवं 9425011467 है।

राजमल पवैया

भोपाल। ऐसे विरले ही होते हैं, जिन्हें अपना पूरा जीवन भी देश और समाज की सेवा के लिए कम लगता है और वे चाहते हैं कि मरने के बाद उनका नश्वर शरीर भी किसी के काम आए। ऐसे महान लोगों की श्रृंखला में स्वतंत्रता संग्राम और विलीनीकरण आंदोलन के सेनानी राजमल पवैया का नाम 26 जनवरी को जुड़ गया, जब उनके परिजनों ने एलएन मेडिकल कॉलेज को उनकी देह दान कर दी। इसके पूर्व उन्हीं की इच्छानुसार उनके नेत्रों का भी दान किया गया, जो किसी के अंधेरे जीवन में उजाला करेंगी। यह भी संयोग है कि देशभक्त 94 वर्षीय श्री पवैया ने अपनी देह भी 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस पर तब त्यागी जब समूचे देश में राष्ट्रभक्ति गीत गूंज रहे थे। श्री पवैया श्रेष्ठ साहित्य साधक भी थे और वे कला मनीषी, जैन रत्न व समाज भूषण आदि अलंकरणों से कई बार अलंकृत हुए। महाराणा प्रताप नगर स्थित गौतम नगर निवासी श्री पवैया ने बुधवार को दोपहर 12 बजकर 10 मिनट पर अंतिम सांस लीं।

शब्दशिल्पियों के आसपास

रचनाधर्मियों की मासिक सम्वाद–पत्रिका

नवीनतम समाचारों के लिए देखें

www.dharohar.net

वार्षिक	:	60 रु.
त्रैवार्षिक	:	150 रु.
आजीवन	:	1000 रु.

- आजीवन सदस्य बनने पर 'शब्दसाधक' उपहार दिया जायेगा.
- 500 रुपये मूल्य के 'शब्द साधक' में देश भर के पन्द्रह हजार से अधिक साहित्यकारों के नाम, पते, दूरभाष आदि की जानकारी है। कुछ साहित्यकारों का संक्षिप्त परिचय भी है।
- यह आपके लिए भी उपयोगी है और मित्रों को उपहार देने के लिए भी।

विज्ञापन सहयोग

रंगीन एक पृष्ठ	:	25,000 – 00 रुपये
एक रंग एक पृष्ठ	:	15000 – 00 रुपये

लेखकों एवं साहित्यिक संस्थाओं के लिए 90 प्रतिशत छूट। रियायत में रंगीन एक पृष्ठ से कम का विज्ञापन स्वीकार नहीं होगा। राशि अग्रिम रूप से भेजना होगा। राशि 'शब्दशिल्पियों के आसपास' के नाम से ही भेजें।

आज ही भेजिये मनीआर्डर अथवा ड्राफ्ट
^'kCnf'kfYi;ksa ds आसपास' के नाम

एफ–50/17, दक्षिण तात्या टोपे नगर
शरद जोशी मार्ग, भोपाल–462003